अध्याय - 03

मानव विकास

विकास के अंतर्गत विरोधाभास

विकास के अंतर्गत विरोधाभास

- अल्पावधि में कुछ प्रदेशों और व्यक्तियों के लिए किया गया विकास बड़े पैमाने पर पारिस्थितिकी निम्नीकरण के साथ अनेक लोगों के लिए गरीबी और कुपोषण लाता है।
- भौतिकवादिता के साथ ही चिकित्सा, शिक्षा, परिवहन व सुरक्षा को आज विकास का पैमाना समझा जाता है जो विकास की पश्चिमी अवधारणा को प्रदर्शित करती है।
- भारत में लोगों की निर्धनता और अमानवीय दशाओं में जीवन व्यतीत करने की बाध्यता के पीछे तीन अंर्तसंबंधित कारकों का विशेष महत्व है-
  - a. सामाजिक सामर्थ्य में कमी- प्रवास व विस्थापन के कारण और कमजोर पड़ते सामाजिक बंधनों के कारण।
  - b.पर्यावरणीय सामर्थ्य में कमी- प्रदूषण के बढ़ते स्तरों के कारण।
  - c. व्यक्तिगत सामर्थ्य में कमी- बढ़ती बीमारियों और दुर्घटनाओं के कारण
- विकास से उत्पन्न प्रादेशिक भिन्नता क्षेत्र विशेष में संपन्नता, तो कहीं विपन्नता लाती है।
- भारत में आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता, मात्र का भी विचार किया जाए तो क्षेत्रीय व सामाजिक स्तर पर अत्यंत गहरी खाई दिखाई देती है।
- उपर्युक्त विकास की अवधारणा सामाजिक अन्याय, प्रादेशिक असंतुलन व पर्यावरण निम्नीकरण के संदर्भ में उदासीन रहा है, जबकि सामाजिक अशांति, जीवन की गुणवत्ता और मानव विकास में गिरावट का कारण बना है।

मानव विकास

- सर्वप्रथम विकास को जीवन की गुणवत्ता में सुधार, अवसर की उपलब्धता, स्वतंत्रता में वृद्धि आदि के संदर्भ में विवेचित करने का उल्लेखनीय प्रयास डॉ. महबूब उल हक़ और प्रो. अमर्त्य सेन के द्वारा किया गया और डॉ. महबूब उल हक़ ने 1990 में मानव विकास सूचकांक की अवधारणा का प्रतिपादन किया
- मानव विकास की उपरोक्त अवधारणा से ही प्रभावित होकर संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम(UNDP) ने 1990 से वार्षिक स्तर पर मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित करना प्रारम्भ किया।
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रस्तुत मानव विकास रिपोर्ट न केवल मानव विकास को परिभाषित करती है, इसके सूचकों में संशोधन और परिवर्तन लाती है अपितु परिकलित स्कोरों के आधार पर विश्व के देशों का कोटि-क्रम भी बनाती है।
- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रस्तुत मानव विकास रिपोर्ट न केवल मानव विकास को परिभाषित करती है, इसके सूचकों में संशोधन और परिवर्तन लाती है अपितु परिकलित स्कोरों के आधार पर विश्व के देशों का कोटि-क्रम भी बनाती है।
- मानव विकास:- "मानव विकास, स्वास्थ्य, भौतिक पर्यावरण से लेकर आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्वतंत्रता तक सभी प्रकार के मानव विकल्पों को सम्मिलित करते हुए लोगों के विकल्पों में विस्तार और उनके शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तथा सशक्तिकरण के अवसरों में वृद्धि की प्रक्रिया है।"
- इस प्रकार विकास का मूल उद्देश्य ऐसी दशाओं को उत्पन्न करना है जिनसे लोग, सार्थक जीवन व्यतीत कर सके। (सार्थक जीवन से तात्पर्य है-दीर्घ जीवन जीना, ज्ञान प्राप्त कर पाना, जीवन में कोई उद्देश्य होना, जीवन जीने के लिए पर्याप्त साधनों का होना।)
- 1993 की मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार "प्रगामी लोकतंत्रीकरण और बढ़ता लोक सशक्तिकरण मानव विकास की न्यूनतम दशाएं हैं।" यह रिपोर्ट यह भी स्पष्ट करता है कि "विकास लोगों को केंद्र में रखकर बुना जाना चाहिए न कि विकास को लोगों के बीच रखकर।"

© JCERT not to be republished

मानव विकास रिपोर्ट 2021-22 से सम्बंधित महत्वपूर्ण आंकड़े

- संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम(UNDP) द्वारा जारी किया गया मानव विकास रिपोर्ट 2021-22 के अनुसार मानव विकास सूचकांक (HDI) में भारत का रैंक 191 देशों के बीच 132 वां रहा।
- मानव विकास की उपरोक्त अवधारणा से ही प्रभावित होकर संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) ने 1990 से वार्षिक स्तर पर मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित करना प्रारम्भ किया।
- भारत का HDI मूल्य वर्ष 2021 में 0.633 रहा, जो विश्व औसत 0.732 से कम है।
- स्कूली शिक्षा: स्कूली शिक्षा के अपेक्षित वर्ष 11.9 वर्ष; स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष 6.7 वर्ष।
- लैंगिक असमानता सूचकांक: लैंगिक असमानता सूचकांक में भारत 122वें स्थान पर है।
- सकल राष्ट्रीय आय: प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 6,590 अमेरिकी डॉलर थी।

उच्च मानव विकास स्तर को प्रदर्शित करने वाले देश:-

देश (Country)	मानव विकास सूचकांक मूल्य (HDI Score)	वैश्विक क्रम (Rank)
Switzerland	0.962	1
Norway	0.961	2
Iceland	0.959	3
Hong Kong	0.952	4
Australia	0.951	5

मध्यम मानव विकास स्तर को प्रदर्शित करने वाले देश:-

देश (Country)	मानव विकास सूचकांक मूल्य (HDI Score)	वैश्विक क्रम (Rank)
Sri Lanka	0.782	73
China	0.768	79
Brazil	0.754	87
Maldives	0.747	90
South Africa	0.713	109
Indonesia	0.705	114

© JCERT not to be republished

देश (Country)	मानव विकास सूचकांक मूल्य (HDI Score)	वैश्विक क्रम (Rank)
Bhutan	0.666	127
Bangladesh	0.661	129
India	0.633	132
Nepal	0.602	143
Myanmar	0.585	149
Pakistan	0.544	161

निम्न मानव विकास स्तर को प्रदर्शित करने वाले देश:-

देश (Country)	मानव वकिास सूचकांक मूल्य (HDI Score)	वैश्वकि क्रम (Rank)
South Sudan	0.385	191
Chad	0.394	190
Niger	0.400	189
Central African Republic	0.404	188
Burundi	0.426	187

- यूएनडीपी द्वारा चुने गए सूचकों का प्रयोग करते हुए भारत भी राज्य स्तर पर मानव विकास रिपोर्ट तैयार करता है।
- मानव विकास सूचकांक में मानव विकास से संबंधित तीन पहलुओं स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच पर आधारित सूचकांक है। इसमें स्वास्थ्य का आकलन जीवन प्रत्याशा के आधार पर, शिक्षा स्कूलिंग के औसत वर्षों एवं साक्षरता दर के आधार पर और संसाधनों तक पहुँच प्रति व्यक्ति आय के आधार किया जाता है।

© JCERT not to be republished

आर्थिक उपलब्धियों के सूचक

आर्थिक समृद्धि की दिशा में भारत की प्रगति

- समृद्ध संसाधन आधार और इन संसाधनों तक सभी, विशेष रूप से निर्धन, दलित और हाशिए पर छोड़ दिए गए लोगों की पहुंच, कल्याण और मानव विकास की कुंजी है।
- सकल राष्ट्रीय उत्पादन और इसकी प्रति व्यक्ति उपलब्धता को किसी देश के संसाधन आधार/अक्षयनिधि का माप माना जाता है।
- विगत वर्षों में भारत में प्रतिवर्ष आय और उपभोग व्यय में वृद्धि हुई है। जिसके कारण गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या के अनुपात में लगातार गिरावट आई है।
- वर्ष 2011-12 में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में 25.7%, शहरी क्षेत्रों में 13.7% और पूरे देश में 21.9% के रूप में अनुमानित किया गया था।
- छत्तीसगढ़, झारखंड, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, बिहार, उड़ीसा, असम, दादर नगर हवेली में उनकी कुल जनसंख्या का 30% से अधिक गरीबी रेखा से नीचे जीवन बसर कर रहे हैं।
- गोवा, केरल, पंजाब, सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, अंडमान निकोबार, लक्षद्वीप दिल्ली में उनकी कुल जनसंख्या का 10% से भी कम गरीबी रेखा से नीचे जीवन बसर कर रहे हैं।
- गरीबी वंचित रहने की अवस्था है। निरपेक्ष रूप से यह व्यक्ति की सतत, स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने के लिए आवश्यक जरूरतों को संतुष्ट न कर पाने की असमर्थता को प्रतिबिंबित करती है।

स्वस्थ जीवन के सूचक

स्वास्थ्य संबंधी प्रगतियाँ

- स्वस्थ जीवन से तात्पर्य दीर्घायु और रोग व पीड़ा से मुक्त जीवन से है।
- शिशु मर्त्यता और माताओं में प्रजननोत्तर मृत्यु दर को घटाने के उद्देश्य से पूर्व और प्रसवोत्तर स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता, वृद्धों के लिए स्वास्थ्य सेवाएं, पर्याप्त पोषण और व्यक्तियों की सुरक्षा एक स्वस्थ और लंबे जीवन के कुछ महत्वपूर्ण माप है।
- स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत द्वारा कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियां निम्न है:-

सूचक		1951	2015
मृत्यु दर		25.1 प्रति हजार	6.5 प्रति हजार
शिशु मृत्यु दर		148 प्रति हजार	37 प्रति हजार
जीवन प्रत्याशा	पुरुष	37.1 वर्ष	66.9 वर्ष
	स्त्री	36.2 वर्ष	70 वर्ष
जन्म दर		40.8 प्रति हजार	20.8 प्रति हजार
लिंगानुपात		946 महिला प्रति हजार पुरुष	943 महिला प्रति हजार पुरुष (वर्ष 2011)
बाल लिंगानुपात (0-6 आयु वर्ष)		983 बालिकाएं प्रति हजार बालक	919 बालिकाएं प्रति हजार बालक (वर्ष 2011)

© JCERT not to be republished

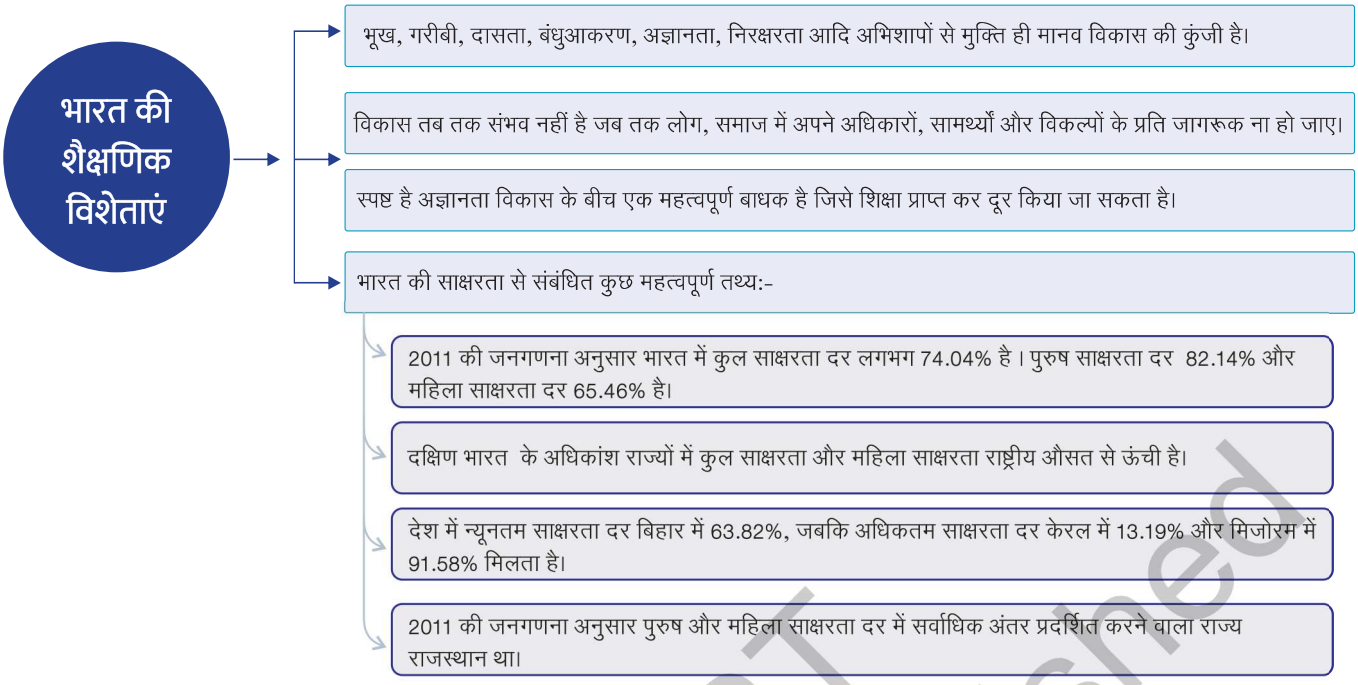

स्वस्थ जीवन के सूचक

- भारतीय राज्यों में सबसे अधिक HDI मूल्य 0.790 के साथ केरल मानव विकास सूचकांक के कोटि क्रम में प्रथम स्थान रखता है। इसके बाद क्रमश: दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, गोवा और पंजाब आते हैं। जबकि छत्तीसगढ़, ओडिशा और बिहार मानव विकास सूचकांक के कोटि क्रम में सबसे निचले स्थान में दिखाई देते है।
- उच्च और निम्न HDI मान होने के कई कारण हैं, जिनमें सामाजिक — राजनीतिक, आर्थिक या ऐतिहासिक कारण शामिल हैं ।
- उच्च साक्षरता केरल के उच्च HDI मूल्य का मुख्य कारण है वहीं दूसरी ओर बिहार, ओडिशा, मध्य प्रदेश, असम और उत्तर प्रदेश में साक्षरता दर सबसे कम है और निम्न HDI मूल्य प्रदर्शित करते हैं।
- HDI मूल्य में आर्थिक विकास की भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है । छत्तीसगढ़, बिहार, मध्य प्रदेश जैसे राज्यों की तुलना में महाराष्ट्र, तमिलनाडु और पंजाब जैसे आर्थिक रूप से विकसित राज्यों का HDI मूल्य अधिक है।
- ऐतिहासिक कारण भी उच्च या निम्न मानव विकास के लिए जिम्मेदार होते हैं, जैसे कि क्षेत्रीय असंतुलन और सामाजिक असमानताएं जो ब्रिटिश काल में सामने आईं, अभी भी

© JCERT not to be republished

विकास के स्तर को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे अभी भी भारत में राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रणाली को प्रभावित कर रहे हैं। सरकार द्वारा नियोजित विकास होने के बावजूद, सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य अभी भी आदर्श स्तर से दूर हैं ।

जनसंख्या, पर्यावरण और विकास :-

- यद्यपि विकास ने मानव जीवन की गुणवत्ता में अनेक प्रकार से महत्त्वपूर्ण सुधार किया है किंतु प्रादेशिक विषमताएँ, सामाजिक असमानताएँ, भेदभाव, वंचना, लोगों का विस्थापन, मानवाधिकारों पर आघात और मानवीय मूल्यों का विनाश तथा पर्यावरणीय निम्नीकरण भी बढ़ा है।

- नव-माल्थस वादियों, पर्यावरणविदों और आमूलवादी पारिस्थितिकविदों का विचार है कि एक प्रसन्नचित्त एवं शांत सामाजिक जीवन के लिए जनसंख्या और संसाधनों के बीच उचित संतुलन एक आवश्यक दशा है।

- सर रॉबर्ट माल्थस मानव जनसंख्या की तुलना में संसाधनों के अभाव के विषय में चिंता व्यक्त करने वाले पहले विद्वान थे। इन्होंने अपनी पुस्तक 'प्रिंसिपल ऑफ पॉपुलेशन' (1779) में जनसंख्या के सिद्धांत नामक निबंध में अपने जनसंख्या संबंधी विचार प्रस्तुत किए। जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि जनसंख्या के अनुपात में संसाधनों में वृद्धि नहीं होती।

- वास्तव में जनसंख्या की उपलब्धता की अपेक्षा उनका सामाजिक वितरण अधिक चिंताजनक है। जहां एक ओर समृद्ध देशों और समृद्ध लोगों ने संसाधनों के विशाल भंडारों को नियंत्रित कर रखा है तो वहीं निर्धनों के संसाधन निरंतर सिकुड़ते जा रहे हैं।

- भारतीय संस्कृति और सभ्यता लंबे समय से ही जनसंख्या, संसाधनों और विकास के प्रति संवेदनशील रही हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि प्राचीन ग्रंथ मूलत: प्रकृति के तत्त्वों के बीच संतुलन और समरसता के प्रति चिंतित थे।

- गांधी जी के विचार में व्यक्तिगत मितव्ययिता, सामाजिक धन की न्यासधारिता और अहिंसा एक व्यक्ति और एक राष्ट्र के जीवन में उच्चतर लक्ष्य प्राप्त करने की कुंजी है । उनके विचार क्लब ऑफ़ रोम की रिपोर्ट 'लिमिट्स टू ग्रोथ' (1972), शूमाकर की पुस्तक 'स्माल इज ब्यूटीफुल' (1974), ब्रूटलैंड कमीशन की रिपोर्ट 'आवर कॉमन फ्यूचर' (1987) और संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (ब्राजील-1992) के ' एजेंडा - 21' में भी प्रतिध्वनित हुए हैं।

© JCERT not to be republished

अभ्यास

प्रश्नावली

1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर को चुनिए।

(i) मानव विकास सूचकांक (2011) के संदर्भ में विश्व के देशों में भारत की निम्नलिखित में से कौन-सी कोटि थी?

(क) 126 (ख) 134

(ग) 128 (घ) 129

(ii) मानव विकास सूचकांक में भारत के निम्नलिखित राज्यों से किस एक की कोटि उच्चतम है?

(क) तमिलनाडु (ख) पंजाब

(ग) केरल (घ) हरियाणा

(iii) भारत के निम्नलिखित राज्यों में से किस एक में स्त्री साक्षरता निम्नतम है?

(क) जम्मू और कश्मीर (ख) अरुणाचल प्रदेश

(ग) झारखंड (घ) बिहार

(iv)भारत के निम्नलिखित राज्यों में से किस एक में 0-6 आयु वर्ग के बच्चों में लिंग अनुपात निम्नतम है?

(क) गुजरात (ख) हरियाणा

(ग) पंजाब (घ) हिमाचल प्रदेश

© JCERT not to be republished

(v) भारत के निम्नलिखित केंद्र शासित प्रदेशों में से किस एक की साक्षरता दर उच्चतम है?

(क) लक्षद्वीप (ख) चंडीगढ़

(ग) दमन और दीव (घ) अंडमान और निकोबार द्वीप

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 30 शब्दों में दें।

(i) मानव विकास को परिभाषित कीजिए।

(ii) उत्तरी भारत के अधिकांश राज्यों में मानव विकास के निम्न स्तरों के दो कारण बताइए।

(iii) भारत के बच्चों में घटते लिंगानुपात के दो कारण बताइए ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में दें।

(i) भारत में 2001 के स्त्री साक्षरता के स्थानिक प्रारूपों की विवेचना कीजिए और इसके लिए उत्तरदायी कारणों को समझाइए।

(ii) भारत के 15 प्रमुख राज्यों में मानव विकास के स्तरों में किन कारकों ने स्थानिक भिन्नता उत्पन्न की है?

© JCERT not to be republished